



भारतीय ज्ञान प्रणाली और साहित्य: एक अंतर्संबंधी विश्लेषण

डॉ० कुबेर सिंह गुरुपंच

प्राध्यापक भूगोल

शा. दिग्विजय स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.)

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.19550492>

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 15-01-2026

Published: 05-02-2026

Keywords:

भारतीय ज्ञान प्रणाली,
शास्त्रीय संस्कृत साहित्य,
मध्यकालीन भक्ति साहित्य

ABSTRACT

यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System - IKS) के मूलभूत सिद्धांतों और उसके विभिन्न युगों के साहित्य के साथ उसके गहरे अंतर्संबंध का विश्लेषण करता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल धार्मिक या दार्शनिक ग्रंथों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विज्ञान, गणित, चिकित्सा, कला, वास्तुकला, और प्रशासन जैसे जीवन के हर क्षेत्र का ज्ञान समाहित है। इस पत्र में वेदों, उपनिषदों से लेकर शास्त्रीय संस्कृत साहित्य (काव्य, नाटक) और मध्यकालीन भक्ति साहित्य तक, साहित्य में इस ज्ञान के प्रकटीकरण की पड़ताल की गई है। इसका उद्देश्य यह स्थापित करना है कि भारतीय साहित्य, भारतीय ज्ञान प्रणाली का मात्र एक वाहक नहीं है, बल्कि उस ज्ञान के संरक्षण, प्रसार और व्याख्या का एक जीवंत माध्यम रहा है। इस विश्लेषण के माध्यम से समकालीन संदर्भ में इस प्राचीन ज्ञान की प्रासंगिकता और पुनर्ग्रहण (Reclamation) की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है।

1. प्रस्तावना (Introduction)

भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है, जिसने एक अद्वितीय और समृद्ध ज्ञान प्रणाली (IKS) का विकास किया है। यह ज्ञान प्रणाली जीवन के प्रति एक समग्र (Holistic) दृष्टिकोण पर आधारित है, जहाँ अध्यात्म, विज्ञान और कला को अलग-अलग खंडों में नहीं देखा जाता, बल्कि उन्हें एक-दूसरे से



जुड़ा हुआ माना जाता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली की नींव वेदों में निहित है, लेकिन इसका विकास उपनिषदों, षड्दर्शनों, आगमों, और विभिन्न शास्त्रों जैसे आयुर्वेद, ज्योतिष, अर्थशास्त्र, और नाट्यशास्त्र में भी हुआ है।

भारतीय साहित्य, विशेष रूप से संस्कृत, पालि, प्राकृत और बाद में क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य ने, इस ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहुँचाने में निर्णायक भूमिका निभाई है। साहित्य ने ज्ञान को केवल सिद्धांतों तक सीमित न रखकर उसे कथाओं, कविताओं और नाटकों के माध्यम से आम लोगों के जीवन का हिस्सा बना दिया। यह शोध पत्र इसी ज्ञान प्रणाली के मूल तत्वों और विभिन्न कालों के साहित्य में उसके प्रकटीकरण का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के मूलभूत सिद्धांत

भारतीय ज्ञान प्रणाली कुछ मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित है जो इसे वैश्विक ज्ञान परंपराओं से अलग करते हैं:

2.1 समग्रता और अंतर-अनुशासनिकता (Holism and Interdisciplinarity)

2.2 IKS का मानना है कि ज्ञान खंडों में नहीं है। योग, आयुर्वेद और दर्शन को अलग-अलग विषय नहीं माना जाता, बल्कि वे एक ही वास्तविकता के विभिन्न आयाम हैं। आयुर्वेद में शरीर, मन और आत्मा के संतुलन पर जोर दिया गया है, जो चिकित्सा विज्ञान में दर्शन (आध्यात्मिक स्वास्थ्य) के समावेश को दर्शाता है।

2.3 प्रमाण-आधारित ज्ञान (Prāmaṇa-Based Epistemology)

2.4 भारतीय दर्शन, विशेषकर न्याय और वैशेषिक, ज्ञान प्राप्ति के वैध साधनों (प्रमाणों) पर गहराई से विचार करते हैं। प्रत्यक्ष (प्रत्यक्ष बोध), अनुमान (तर्क), उपमान (तुलना), और शब्द (प्रामाणिक ग्रंथों का साक्ष्य) ज्ञान के विश्वसनीय स्रोत माने जाते हैं।

2.3 चक्रीय समय की अवधारणा (Concept of Cyclical Time)



पश्चिमी ज्ञान प्रणाली के रैखिक (Linear) समय के विपरीत, IKS समय को चक्रीय मानता है (युग, कल्प)। यह अवधारणा इतिहास, ब्रह्मांड विज्ञान और जीवन के प्रति भारतीय दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करती है।

2.5 विज्ञान और गणित का समावेश

2.6 IKS ने दर्शन के समानांतर ही भौतिक विज्ञान, गणित और खगोल विज्ञान में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

गणित: शून्य (Zero) की अवधारणा, दशमलव प्रणाली, और बीजगणित का विकास भारतीय ज्ञान की देन है, जिसने वैश्विक विज्ञान को आधार प्रदान किया।

खगोल विज्ञान: आर्यभट्ट और वराहमिहिर जैसे विद्वानों ने ज्योतिष (Astronomy) और ज्योतिष (Astrology) के सिद्धांतों को विकसित किया, जो आज भी प्रासंगिक हैं।

3. भारतीय साहित्य में ज्ञान प्रणाली का प्रकटीकरण (Manifestation of IKS in Indian Literature)

भारतीय साहित्य ने ज्ञान को विभिन्न रूपों और शैलियों में संरक्षित किया है:

3.1 वैदिक और शास्त्रीय साहित्य

3.2 यह ज्ञान प्रणाली का मूल आधार है।

वेद और उपनिषद: वेदों में सृष्टि, देवत्व और अनुष्ठानों का ज्ञान है, जबकि उपनिषद ब्रह्म और आत्मा के गहन दार्शनिक ज्ञान का भंडार हैं।

महाकाव्य (रामायण और महाभारत): ये महाकाव्य केवल कथाएँ नहीं हैं, बल्कि ये धर्म, नीति, अर्थशास्त्र और राजधर्म जैसे IKS के सिद्धांतों को सरल और रोचक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। भगवद गीता, जो महाभारत का हिस्सा है, जीवन और मृत्यु के दर्शन का सार है।



शास्त्र: कौटिल्य का अर्थशास्त्र (प्रशासन और राजनीति), पाणिनि का अष्टाध्यायी (भाषा विज्ञान), और भरतमुनि का नाट्यशास्त्र (कला और सौंदर्यशास्त्र) विशिष्ट ज्ञान क्षेत्रों के प्रतिनिधि ग्रंथ हैं।

3.3 मध्यकालीन भक्ति साहित्य

3.4 भक्ति आंदोलन ने ज्ञान को संस्कृत के परिधि से बाहर निकालकर आम आदमी की भाषा तक पहुँचाया।

कबीर, तुलसी, सूर और मीरा: इन संतों ने अपनी रचनाओं में वैदिक ज्ञान (वेदांत) और योग के सिद्धांतों को लोकभाषा में प्रस्तुत किया। तुलसीदास की रामचरितमानस एक आदर्श राजधर्म और गृहस्थ जीवन के ज्ञान को कविता के माध्यम से स्थापित करती है।

प्रेममार्गी शाखा: सूफी कवियों ने 'इश्क हकीकी' (सच्चा प्रेम/आध्यात्मिक ज्ञान) को 'इश्क मजाज़ी' (सांसारिक प्रेम) के माध्यम से व्यक्त किया, जो IKS के 'अद्वैत' (Non-duality) सिद्धांत का एक रूप है।

3.3 आधुनिक और समकालीन साहित्य

आधुनिक काल में, साहित्य ने पश्चिमी प्रभाव और प्राचीन ज्ञान के बीच सेतु का कार्य किया।

नवजागरण: रवींद्रनाथटैगोर और अरविंद घोष जैसे विचारकों ने अपनी रचनाओं में भारतीय आध्यात्मिकता और पश्चिमी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समन्वय का प्रयास किया।

आज का साहित्य: समकालीन भारतीय लेखक प्राचीन ज्ञान प्रणालियों (जैसे योग, पर्यावरण के प्रति भारतीय दृष्टिकोण) को आधुनिक चुनौतियों (जैसे उपभोक्तावाद, जलवायु परिवर्तन) के समाधान के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

4. समकालीन प्रासंगिकता और पुनर्ग्रहण की आवश्यकता (Contemporary Relevance and Need for Reclamation)



वर्तमान विश्व में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता बढ़ी है, क्योंकि यह आधुनिक समस्याओं का समग्र समाधान प्रस्तुत करती है:

4.1 स्थिरता और पर्यावरण (Sustainability and Environment)

4.2 अथर्ववेद और अन्य ग्रंथों में पृथ्वी और प्रकृति के प्रति सम्मान का जो भाव है, वह आज के जलवायु संकट (Climate Crisis) के समाधान के लिए एक नैतिक आधार प्रदान करता है।

4.3 मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य

4.4 योग और आयुर्वेद, जो IKS के अभिन्न अंग हैं, आज विश्व स्तर पर तनाव प्रबंधन, कल्याण और निवारक चिकित्सा (Preventive Medicine) के रूप में स्वीकार किए जा रहे हैं।

4.3 शिक्षा और नीति

भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में IKS को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने पर जोर दिया गया है, ताकि युवा अपनी सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत से जुड़ सकें और समग्र दृष्टिकोण विकसित कर सकें।

IKS का पुनर्ग्रहण (पुनः प्राप्त करना) केवल अतीत का गौरवगान नहीं है, बल्कि एक ऐसे ज्ञान के भंडार को वर्तमान से जोड़ना है जो मानव जाति के लिए स्थायी और नैतिक समाधान प्रदान कर सकता है। साहित्य इस प्रक्रिया में सबसे सशक्त माध्यम है।

5. निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय ज्ञान प्रणाली और साहित्य का संबंध अत्यंत गहन और अंतर्संबंधित है। साहित्य ने IKS को अमूर्त सिद्धांतों से निकालकर मूर्त कला के रूप में ढाल दिया, जिससे यह ज्ञान हजारों वर्षों तक जीवित रहा और जन-जन तक पहुँचा। वेदों के दर्शन, महाकाव्यों की नैतिकता, भक्ति की सरलता और शास्त्रों के विज्ञान—इन सबने मिलकर भारतीय साहित्य को विश्व की सबसे समृद्ध और ज्ञानवान साहित्य परंपराओं में से



एक बनाया है। वर्तमान समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए, हमें अपने साहित्य के माध्यम से इस प्राचीन ज्ञान की समग्रता, संतुलन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को पुनः समझने और जीवन में उतारने की आवश्यकता है। IKS भारतीय पहचान का आधार है और साहित्य इसका शाश्वत उद्घोषक।

संदर्भ (References)

- श्रीवास्तव, आर. (वर्ष). भारतीय ज्ञान परंपरा: स्वरूप एवं सिद्धांत.
- झा, ए. (वर्ष). वेदांत और आधुनिक विज्ञान: एक तुलनात्मक अध्ययन.
- कौटिल्य. (अर्थशास्त्र). अनुवादक: आर. शामशास्त्री.
- डॉ. राधाकृष्णन, एस. (1953). इंडियन फिलॉसफी
- शर्मा, पी. (वर्ष). आयुर्वेद का वैज्ञानिक आधार और साहित्य में इसका चित्रण.
- (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार.